ISSN : 2583-2948

होली का एक सच

प्रोफेसर सोमपाल सिंह
प्राचार्य, डी एस एम कॉलेज कांठ मुरादाबाद
एम जे पी रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश
मो॰ - 9411485252

फागुन की आई है बहार

घर आंगन सब महके हैं,

गुझिया की मिठास और ठंडाई से

तन मन सबका बहके है।

रंग भरे इस त्यौहार में

खुशियां बिखरी चारों ओर,

देखकर होली की रौनक को

हो गए सब इसमें सराबोर,

एक तरफ त्योहार खुशी और रंगों का

प्रेम विश्वास और मेलजोल का,

दूजा इसमें दुख भारी।

पीने वाले पीकर होली में

हुड़दंग मचाते फिरते हैं,

कही खुशी के रंग है बिखरे

कहीं गमों का दौर शुरू

होली आई होली आई

कहे सब वो जो जिसके लिए सही।

पीकर गाली गलौज करें

कहीं झगड़े दंगे करें,

खुद भी नंगा नाच करें

घर का कोना कोना भी दूषित करें।

ISSN : 2583-2948

छोड़ प्रेम की बोली मीठी

कड़वे शब्दों से मन छलनी करें

सड़कों पर फिरते मारे मारे,

घर में तिर्या राह निहारे

कब आएगा कंत प्रिय

फाग का झाग बना जीवन

होली के सब रंग धुले।

कोई नाचे मस्ती में आकर

चारों और गुलाल उड़े,

कहीं सोच यही भारी है

कब होली की रात कटे

कहीं मन में खुशियों के मेले हैं

कहीं डर और दर्द भरे।

बस चली जाए यह होली भी,

ऐसे लोगों ने तो सारे रंग उड़ा दिये

पीने वालों को तो फिर से

हुआ बहाना होली का।।